विचित्रम् एवं सूक्ष्मदर्शिनी: क्वीर दृश्यता के विभिन्न आयाम

- जयकृष्णन एम्

शोध सारांश

फिल्मों में प्रतिनिधान का तात्पर्य समाज के विभिन्न वर्गों, जातियों, लिंगों और लैंगिकताओं को स्क्रीन पर प्रस्तुत किए जाने के तरीकों से है। फिल्में केवल मनोरंजन का साधन नहीं हैं, बल्कि वे समाज के विचारों, मान्यताओं और पूर्वाग्रहों को प्रतिबिंबित करने तथा परिवर्तित करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम भी है। पिछले कुछ दशकों में भारतीय मुख्यधारा सिनेमा में क्वीर प्रतिनिधान धीरे-धीरे एक महत्वपूर्ण विषय बनता जा रहा है। हालांकि, विशुद्ध रूप से क्वीर विषयवस्तु पर केंद्रित फिल्मों की तुलना में मुख्यधारा की व्यावसायिक फिल्मों में क्वीर समुदाय से संबंधित समस्याओं को उजागर करने वाली फिल्मों की संख्या अपेक्षाकृत कम है। प्रस्तुत शोधपत्र मलयालम की दो प्रमुख फिल्मों - 'विचित्रम्' और 'सूक्ष्मदर्शिनी' का विश्लेषण करता है, जिनमें अभिव्यक्त होमोफोबिया को केन्द्र में रखा गया है। इन फिल्मों के अध्ययन में संवेदनशील प्रतिनिधान से जुड़े मुद्दों की आलोचनात्मक समीक्षा की गई है।

बीज शब्द: क्वीर सिनेमा, मलयालम सिनेमा, सूक्ष्मदर्शिनी, विचित्रम्, समलैंगिकता, प्रतिनिधान, क्वीरफोबिया

भारतीय सिनिमा और प्रतिनिधान का मुद्दा

भारतीय फिल्मों में प्रतिनिधान समाज की धारणाओं, दृष्टिकोणों और मूल्यों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह जनसंचार का एक अत्यंत प्रभावशाली माध्यम है, जो न केवल सांस्कृतिक मान्यताओं को प्रतिबिंबित और चुनौती देता है, बल्कि हाशिए पर पड़े समुदायों की आवाज़ को मंच प्रदान कर समावेशिता को भी प्रोत्साहित करता है। इस संदर्भ में, भारतीय सिनेमा में प्रतिनिधान के महत्व का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। फिल्में समाज का दर्पण होती हैं, जो उसकी जटिलताओं, संघर्षों और विविधताओं को उजागर करती हैं। भारत जैसे बहुसांस्कृतिक और बहुभाषी देश में, जहाँ लोग विभिन्न धर्मों, जातियों, लिंगों और लैंगिक पहचानों से जुड़े हैं, प्रामाणिक प्रतिनिधान यह सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक समुदाय स्वयं को पर्दे पर देख सके। सटीक चित्रण उपेक्षित समूहों के अनुभवों को मान्यता प्रदान करता है, जिससे उनमें अपनत्व और सम्मान की भावना उत्पन्न होती है। उदाहरणस्वरूप, असुरन (2019) और कर्णन (2021) जैसी फिल्में जातिगत भेदभाव की कठोर सच्चाइयों को उजागर करती हैं, जिन पर अक्सर मुख्यधारा की फिल्मों में चर्चा नहीं की जाती।

भारतीय सिनेमा ने ऐतिहासिक रूप से स्त्रियों को आज्ञाकारी भूमिकाओं में, LGBTQ+ व्यक्तियों को हास्यास्पद पात्रों के रूप में, और विभिन्न समुदायों को नकारात्मक छवियों में प्रस्तुत कर कई हानिकारक रूढ़ियों को स्थापित किया है। इन पूर्वाग्रहों को चुनौती देने के लिए संवेदनशील कथा-वाचन शैली का प्रयोग आवश्यक है, जिससे न केवल सामाजिक धारणाओं में परिवर्तन संभव हो सके, बल्कि दर्शकों में व्यापक और सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण विकसित किया जा सके। द ग्रेट इंडियन किचन (2021) और थप्पड़ (2020) जैसी फिल्में स्त्री की स्वतंत्रता और अस्मिता को पुनर्परिभाषित करती हैं, जबकि शुभ मंगल ज़्यादा सावधान (2020) और माई लाइफ पार्टनर (2014) समलैंगिक संबंधों के सामान्यीकरण की दिशा में महत्त्वपूर्ण योगदान देती हैं।

प्रतिनिधान सशक्तिकरण का एक प्रभावी साधन है। जब हाशिए पर स्थित समुदाय अपने संघर्षों और उपलब्धियों को प्रामाणिक रूप से प्रस्तुत होते हुए देखते हैं, तो यह उनमें गर्व और आत्मसम्मान की भावना को उत्पन्न करता है। उदाहरणस्वरूप, काला (2018) और सैराट (2016) जैसी फिल्मों में दलित समुदाय का प्रतिनिधान उनके सामाजिक-आर्थिक मुद्दों को उजागर करने और उनकी आवाज़ को मुख्यधारा में लाने में सहायक सिद्ध हुआ है।

सिनेमा की लाखों लोगों तक पहुँचने और जनमत को प्रभावित करने की अद्वितीय क्षमता होती है। यह वर्जित विषयों या कम चर्चित सामाजिक मुद्दों पर केंद्रित कथानकों के माध्यम से दर्शकों को शिक्षित करने और संवाद को प्रोत्साहित करने का कार्य कर सकता है। उदाहरण के लिए, पैड मैन (2018) ने मासिक धर्म जैसे सामाजिक वर्जनाओं से जुड़े विषय पर चर्चा को बढ़ावा दिया, जबकि अलीगढ़ (2016) ने LGBTQ+ समुदाय द्वारा झेले जा रहे संघर्षों को मानवीय दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया। इस प्रकार की फिल्में केवल जागरूकता बढ़ाने तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि स्वीकृति और समावेशिता के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करने में भी सहायक होती हैं।

फिल्मों में प्रतिनिधान यह सुनिश्चित करता है कि फिल्म उद्योग अधिक समावेशी बने। जब विविध पात्रों और कथाओं को प्रस्तुत किया जाता है, तो यह विभिन्न पृष्ठभूमियों से आने वाले कलाकारों, लेखकों और फिल्म निर्माताओं को अपने विचार व्यक्त करने के अवसर प्रदान करता है। विशेष रूप से, ओटीटी प्लेटफॉर्म के उदय ने क्षेत्रीय सिनेमा को एक नया मंच प्रदान किया है, जिससे छोटे शहरों और स्वदेशी समुदायों की कहानियाँ प्रमुखता से उभरकर सामने आई हैं। इससे बॉलीवुड की शहरी-केंद्रित कथाओं को चुनौती मिलने के साथ-साथ भारतीय समाज की बहुलता को अधिक सशक्त अभिव्यक्ति मिली है।

भारतीय सिनेमा में प्रतिनिधान केवल एक रचनात्मक अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक उत्तरदायित्व भी है। भारतीय समाज की विविधता को प्रामाणिक रूप से चित्रित करने और उसकी संरचनात्मक असमानताओं को संबोधित करने के माध्यम से, सिनेमा के पास जागरूकता फैलाने, प्रेरित करने और सामाजिक परिवर्तन लाने की शक्ति है। जैसे-जैसे फिल्म निर्माता अधिक समावेशी कथाओं को अपनाने लगे हैं, भारतीय सिनेमा एक न्यायसंगत और सहानुभूतिपूर्ण समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है, जहाँ प्रत्येक आवाज़ को मंच मिले और प्रत्येक कथा को उचित सम्मान प्राप्त हो।

पुरुष केन्द्रित परिवार व्यवस्था में पीड़ित समलैंगिक व्यक्तियाँ :

विचित्रम् एक मलयालम फिल्म है, जो 2022 में प्रदर्शित हुई थी। यह एक हॉरर-थ्रिलर ड्रामा है, जिसे निखिल रवीन्द्रन ने लिखा तथा अछु विजयन ने निर्देशित किया। फिल्म पारिवारिक संबंधों, रहस्यों और अलौकिक घटनाओं को केंद्र में रखती है। इसका शीर्षक इसकी असाधारण कथा-वस्तु को प्रतिबिंबित करता है।

कहानी जैस्मिन (भवानी श्री) और उनके पाँच बेटों के इर्द-गिर्द घूमती है। यह परिवार हाल ही में विरासत में प्राप्त एक प्राचीन, रहस्यमयी हवेली में निवास करने लगता है। हालाँकि, इस हवेली में अजीबोगरीब घटनाएँ घटित होने लगती हैं, जो परिवार को भय और असमंजस में डाल देती है। जैसे-जैसे कथा आगे बढ़ती है, अलौकिक घटनाओं की तीव्रता बढ़ती जाती है, और प्रत्येक पात्र को अपने अतीत तथा भय का सामना करने के लिए विवश होना पड़ता है। इन घटनाओं के माध्यम से फिल्म पारिवारिक संबंधों, दबी-छिपी स्मृतियों और आंतरिक संघर्षों को उजागर करती है।

विचित्रम् मात्र एक पारंपरिक हॉरर फिल्म नहीं है; यह भावनात्मक गहराई और पारिवारिक रिश्तों की जटिलताओं को भी दर्शाती है। फिल्म में माँ और बेटों के संबंधों को संवेदनशीलता से चित्रित किया गया है। यह दिखाया गया है कि किस प्रकार भय और संघर्ष के बीच भी परिवार एकजुट रह सकता है। हवेली केवल एक भौतिक स्थान नहीं, बल्कि अतीत के रहस्यों और दमन की स्मृतियों का प्रतीक बनकर उभरती है। जैसे-जैसे कथानक विकसित होता है, यह साधारण भूतिया हवेली की कहानी से कहीं अधिक जटिल रूप धारण कर लेता है। फ्लैशबैक के माध्यम से दर्शकों का परिचय मार्था (कनि कुसुती) से कराया जाता है, जो हवेली के पूर्व स्वामी की दिवंगत पुत्री है। मार्था और जैस्मिन के जीवन में उल्लेखनीय समानताएँ पाई जाती हैं - मार्था का जीवन जैस्मिन के संभावित भविष्य का प्रतिबिंब प्रतीत होता है, यदि वह भी अपने परिवार से दूर जाने का निर्णय न लेती। निम्न सामाजिक वर्ग के व्यक्ति से प्रेम

करने के कारण बहिष्करण की पीड़ा को दोनों पात्रों के माध्यम से प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया गया है। यहीं पर कथा का क्वीयर दृष्टिकोण उभरकर सामने आता है। यह स्पष्ट होता है कि मार्था के पिता, अलेक्ज़ेंडर, अत्यधिक नियंत्रक और 'अत्यधिक संरक्षणवादी' (overprotective) व्यक्ति थे। वे परिवार के न केवल प्रतीकात्मक, अपितु वास्तविक रूप से भी सर्वोच्च अधिकारी थे, और मार्था उनके भय के वातावरण में पली-बढ़ी। मार्था एक बोर्डिंग स्कूल में अध्ययन करती है, जहाँ वह अपनी सहपाठी संगमित्रा (केतकी नारायण) के प्रति प्रेम का अनुभव करती है। संगमित्रा, मार्था की खोज में, उसके देश तक आती है। किंतु जब अलेक्ज़ेंडर को अपनी पुत्री की लैंगिकता का आभास होता है, तो वे क्रोधित होकर संगमित्रा की नृशंस हत्या कर देते हैं। यही घटना मार्था के लापता होने का कारण बनती है, जिसे सभी मृत मान लेते हैं, और हवेली में हो रही अलौकिक गतिविधियों का मूल कारण उसकी आत्मा को ठहराया जाता है।

अधिकांश क्वीर सिनेमा अपनी कथा को प्रत्यक्ष रूप से प्रस्तुत करते हैं, किंतु विचित्रम् पारंपरिक भारतीय परिवारों में पितृसत्ता के प्रभाव को सूक्ष्म और रूपकात्मक दृष्टिकोण से विश्लेषित करता है। यह फिल्म एक समलैंगिक स्त्री-सम्बंध के माध्यम से पात्रों के विकास और उनकी आपसी अंतःक्रियाओं को प्रस्तुत करती है, जो मुख्यधारा भारतीय सिनेमा में सामान्यतः देखे जाने वाले रूढ़िवादी चित्रणों से भिन्न है। जहाँ अधिकांश भारतीय फिल्में समलैंगिक संबंधों को या तो हास्य के रूप में प्रस्तुत करती हैं या उन्हें अतिनाटकीयता से भर देती हैं, वहीं विचित्रम् इस विषय को संवेदनशीलता और सम्मान के साथ चित्रित करती है। यह न तो वस्तुवादीकरण (objectification) की ओर झुकती है, न ही सनसनीखेजता (sensationalism) को अपनाती है, बल्कि पात्रों की भावनात्मक गहराई और उनके संघर्षों पर केंद्रित रहती है।

यह फिल्म क्वीर्नेस को व्यापक सामाजिक और पारिवारिक स्वीकृति के संदर्भ में रखकर उसका विश्लेषण करती है। यह विषय कथा के मूल ढांचे में इस प्रकार गुंथा गया है कि वह पारंपरिक मान्यताओं को चुनौती देता है तथा प्रेम और संबंधों की एक अधिक समावेशी परिभाषा की ओर संकेत करता है। हालाँकि यह उपकथा अत्यधिक प्रत्यक्ष नहीं है, तथापि यह फिल्म की पहचान और आत्म-खोज की प्रक्रिया को और अधिक जटिल तथा बहुआयामी बना देती है। संपूर्ण रूप से, फिल्म विविधताओं को अपनाने की आवश्यकता पर बल देती है - चाहे वे पारिवारिक संरचनाओं, व्यक्तिगत चुनावों या सामाजिक अपेक्षाओं से संबंधित हों।

फिल्म में पितृसत्ता एक सर्वव्यापी शक्ति के रूप में उभरती है, जो परिवार, समाज और व्यक्तिगत पहचान के निर्माण की प्रक्रिया को प्रभावित करती है। यह पृष्ठभूमि में उन सामाजिक मानदंडों और अपेक्षाओं का प्रतिनिधान करती है, जो अक्सर दमनकारी सिद्ध होते हैं। परिवार को विरासत में एक पुरानी और प्रभावशाली हवेली प्राप्त होती है, जो प्रतीकात्मक रूप से पितृसत्ता के नियंत्रण और परंपराओं के दमनकारी प्रभाव का द्योतक बनती है। यह हवेली केवल एक निवास-स्थान नहीं है, बल्कि यह पूर्ववर्ती पीढ़ियों, परंपराओं और छिपे हुए रहस्यों के बोझ को वहन करने वाला स्थान भी है - एक ऐसा स्थान, जहाँ लिंगगत भूमिकाएँ कठोरता से निर्धारित हैं और विषमलैंगिक अपेक्षाओं को अनिवार्य रूप से स्थापित किया जाता है। फिल्म के कथानक में बुने गए पितृसत्तात्मक नियंत्रण के तंतु स्पष्ट करते हैं कि यह व्यवस्था कैसे न केवल व्यक्तियों की व्यक्तिगत स्वतंत्रता को सीमित करती है, बल्कि उनकी लैंगिक पहचान और अभिविन्यास पर भी नियंत्रण बनाए रखती है। यह संरचना विशेष रूप से क्वीर व्यक्तियों की आवाज़ों को दबाने और उनकी आत्म-अभिव्यक्ति को प्रतिबंधित करने का कार्य करती है।

फिल्म में समलैंगिक संबंध इस तथ्य को उजागर करता है कि पितृसत्तात्मक समाज किस प्रकार LGBTQ+ पहचानों को दबाता और कलंकित करता है। हवेली, अपने दमनकारी वातावरण और गूढ़ रहस्यों सहित, परंपरा और सामाजिक अपेक्षाओं के बोझ का प्रतीक बनती है, जो व्यक्ति की स्वतंत्रता को बाधित करती है। यह स्थान केवल भौतिक संरचना न होकर, सामाजिक न्याय, परंपरा और विरासत में प्राप्त पितृसत्तात्मक प्रभाव का प्रतिबिंब है, जो पात्रों को आश्रय प्रदान करने के साथ-साथ उन्हें सीमित भी करता है। फिल्म में रहस्य और चुप्पी उन प्रक्रियाओं को उजागर करते हैं, जिनके माध्यम से पितृसत्तात्मक समाजों में प्रायः क्वीर पहचानों को हाशिये पर धकेल दिया जाता है। इस दमन के कारण भय और असहजता का एक अंतर्निहित वातावरण उत्पन्न होता है, जिससे व्यक्ति की आत्म-स्वीकृति और सामाजिक मान्यता में बाधा उत्पन्न होती है। पात्रों के मध्य संवाद और अंतःक्रियाएँ स्पष्ट रूप से यह दर्शाती हैं कि किस प्रकार पितृसत्तात्मक मानदंड न केवल व्यक्तिगत संबंधों को प्रभावित करते हैं, बल्कि क्वीर पहचानों की स्वीकृति में भी अवरोध उत्पन्न करते हैं। फिल्म में क्वीरनेस एक विद्रोही शक्ति के रूप में उभरती है, जो पितृसत्ता द्वारा स्थापित कठोर मानकों को चुनौती देती है। एक समलैंगिक स्त्री-सम्बंध का समावेश कथा को गहराई प्रदान करता है तथा पहचान, प्रेम, एवं सामाजिक अपेक्षाओं के विरुद्ध प्रतिरोध के विषय को केंद्र में रखता है। रूढ़िवादी पृष्ठभूमि में समलैंगिक संबंध का चित्रण पितृसत्तात्मक संरचनाओं के विरुद्ध प्रतिरोध का प्रतीक बनता है। इस परिप्रेक्ष्य में, क्वीर प्रेम एक मौन विद्रोह के रूप में कार्य करता है, जो उस व्यवस्था

को चुनौती देता है जो इसे मिटाने या अमान्य करने का प्रयास करती है। फिल्म पितृसत्ता का प्रत्यक्ष सामना करने के बजाय, समलैंगिक संबंधों को कथा में सूक्ष्मता से समाहित करती है। यह दृष्टिकोण उन अनुभवों को प्रतिबिंबित करता है, जिनका सामना अनेक समलैंगिक व्यक्ति सामाजिक दबावों के बीच करते हैं। यह संघर्ष जीवित रहने और आत्म-प्रामाणिकता बनाए रखने के मध्य संतुलन स्थापित करने की प्रक्रिया को दर्शाता है।

फिल्म में दो समान-लिंग प्रेमियों के आध्यात्मिक संबंध को दो सफेद खरगोशों के प्रतीक के माध्यम से व्यक्त किया गया है। जब जैक्सन - जो कि शाइन टॉम चाको द्वारा अभिनीत पात्र है तथा पितृसत्तात्मक व्यवस्था का प्रतिनिधि है - एक खरगोश को मारकर खा जाता है, तो हवेली की नींव हिल जाती है और वह मार्था के क्रोध का शिकार बनता है, जिसे मृत मान लिया गया था। यह दृश्य प्रतीकात्मक रूप से दर्शाता है कि पितृसत्ता किस प्रकार क्वीर अस्तित्व के विरुद्ध कार्य करती है और कैसे यह दमन अंततः स्वयं उस व्यवस्था के लिए विनाशकारी सिद्ध हो सकता है। इसके अतिरिक्त, फिल्म के शीर्षक विचित्रम् का विश्लेषण भी विचारणीय है। 'क्वीर' शब्द का मूल अर्थ 'असामान्य' या 'विचित्र' से जुड़ा हुआ है। इस शीर्षक के माध्यम से फिल्म यह अन्वेषण करती है कि पितृसत्तात्मक समाज किस प्रकार क्वीर पहचानों को 'विचित्र' और 'अस्वीकृत' के रूप में वर्गीकृत कर उन्हें दमन के दायरे में रखता है। इस प्रकार, विचित्रम् केवल एक हॉरर-थ्रिलर नहीं है; यह सामाजिक संरचनाओं पर गहन विमर्श प्रस्तुत करने वाली रचना भी है।

रूढ़िवादी पारिवारिक मूल्य एवं 'सूक्ष्मदार्शिनी' :

सूक्ष्मदर्शिनी एक मलयालम कॉमेडी-थ्रिलर फिल्म है, जिसका निर्देशन एम. सी. जितिन द्वारा किया गया है। यह फिल्म 22 नवंबर, 2024 को रिलीज़ हुई थी और इसमें नज़रिया नाज़िम तथा बेसिल जोसेफ ने प्रमुख भूमिकाएँ निभाई हैं। कथा एक युवा व्यक्ति के इर्द-गिर्द घूमती है, जो अपनी अल्ज़ाइमर-पीड़ित माँ के साथ अपने पैतृक घर लौटता है। नज़रिया एक जिज्ञासु पड़ोसी की भूमिका में हैं, जो उसके व्यवहार में कुछ असामान्य प्रतीत होने पर संदेह व्यक्त करती हैं। फिल्म की कथा उसकी जांच-पड़ताल और उससे उजागर होने वाले रहस्यों पर केंद्रित है। इस फिल्म को इसके कुशल पटकथा-लेखन के लिए व्यापक रूप से सराहा गया है, जो सस्पेंस और हास्य के मध्य संतुलन स्थापित करने में सफल होती है। साथ ही, फिल्म में सामाजिक मुद्दों पर सूक्ष्म टिप्पणी भी देखी जाती है, जिसे कथानक के साथ बारीकी से बुना गया है। नज़रिया और बेसिल के अभिनय की विशेष रूप से प्रशंसा की गई है।

हालाँकि सूक्ष्मदर्शिनी का मुख्य विषय समलैंगिकता नहीं है, तथापि फिल्म के अंतिम चरण में यह विषय अप्रत्याशित रूप से उभरकर सामने आता है। यह फिल्म जटिल मानवीय संबंधों और मनोवैज्ञानिक जटिलताओं की पड़ताल करती है, किंतु इसकी कथा मुख्य रूप से नायक की माँ से जुड़े रहस्यों और पड़ोसी द्वारा की गई जांच पर केंद्रित रहती है। इसके बावजूद, फिल्म की परिणति LGBTQ+ पहचान के सामाजिक स्थान और पारिवारिक संरचना के भीतर उसके स्वीकार की कठिनाइयों पर एक महत्वपूर्ण टिप्पणी प्रस्तुत करती है।

फिल्म के अंत में यह उजागर होता है कि मैनुअल (बेसिल जोसेफ द्वारा अभिनीत पात्र) अपनी माँ, चाचा और चचेरे भाई के साथ मिलकर अपनी बहन मेरिन की हत्या की साजिश रचता है। यह हत्या इसलिए की जाती है क्योंकि मेरिन ने समलैंगिक के रूप में अपनी पहचान स्वीकारते हुए अपनी प्रेमिका अदिति के साथ रहने का निर्णय लिया था। मेरिन और अदिति न केवल जीवन-साथी थीं, बल्कि व्यावसायिक भागीदार भी थीं। उन्होंने विदेश में रहते हुए एक संतान गोद लेने की योजना बनाई थी। जब मेरिन अपने परिवार को सूचित करती है कि वह अपनी पैतृक संपत्ति में अपने हिस्से की मांग कर रही है, तो परिवार उसकी यौन पहचान से शर्मिंदा होने के साथ-साथ संपत्ति के विभाजन की संभावना से भी चिंतित हो जाता है। परिवार को भय था कि यदि मेरिन का समलैंगिक संबंध सार्वजनिक हो गया, तो सामाजिक प्रतिष्ठा पर आँच आएगी। अतः समाज में अपमानित होने और आर्थिक हानि के भय से प्रेरित होकर, मेरिन की माँ, भाई और अन्य पारिवारिक सदस्यों ने उसकी हत्या करने की योजना बनाई। वे मेरिन को केरल बुलाकर उसकी हत्या कर देते हैं और इस अपराध को गुप्त रखने में सफल रहते हैं - जब तक कि प्रियदर्शिनी इस रहस्य का पर्दाफाश नहीं कर देती।

सूक्ष्मदर्शिनी में क्वीयर पात्र की क्रूरतापूर्ण हत्या केवल पारंपरिक पारिवारिक मूल्यों और यौन पहचान के टकराव का परिणाम नहीं है, बल्कि इसके पीछे आर्थिक स्वार्थ भी निहित है। इस फिल्म में जिस परिवार को चित्रित किया गया है, वह विचित्रम् के परिवार की तुलना में भिन्न सामाजिक संरचना रखता है। विचित्रम् में पारंपरिक पितृसत्तात्मक व्यवस्था का प्रभाव देखा जाता है, जबकि सूक्ष्मदर्शिनी में ग्रेसी का परिवार मातृसत्तात्मक संरचना के अधीन है। अपने पति की मृत्यु के उपरांत ग्रेसी परिवार की प्रमुख बन जाती है, किंतु वह अपने पुत्र मैनुअल को अपनी पुत्री मेरिन की तुलना में अधिक महत्त्व देती है। यही कारण था कि मेरिन ने अपने परिवार से दूरी बना ली और न्यूज़ीलैंड में स्वतंत्र रूप से जीवन व्यतीत करने लगी। मेरिन के समलैंगिक होने के कारण परिवार ने उससे सामाजिक और भावनात्मक दूरी बनाए रखी। उन्होंने इस विषय को अपने रिश्तेदारों या परिचितों से साझा नहीं किया, और मेरिन भी

यह भली-भाँति समझती थी कि उसका परिवार कभी भी उसे अपनी शर्तों पर जीवन जीने की अनुमति नहीं देगा। जब मेरिन और अदिति ने एक संतान गोद लेने का निर्णय लिया, तो परिवार को भय हुआ कि समाज में यह सूचना फैलने से उनकी प्रतिष्ठा धूमिल हो जाएगी। अंततः जब मेरिन ने अपनी पैतृक संपत्ति में अपने अधिकार की माँग की, तो परिवार ने उसे समाप्त करने का निर्णय लिया।

सूक्ष्मदर्शिनी इस सजीव यथार्थ को प्रस्तुत करती है कि किस प्रकार पारिवारिक संरचनाएँ, सामाजिक प्रतिष्ठा और आर्थिक हित LGBTQ+ व्यक्तियों के जीवन और अस्तित्व के लिए गंभीर चुनौतियाँ उत्पन्न कर सकते हैं। फिल्म का यह उपकथानक केवल एक व्यक्तिगत त्रासदी का चित्रण नहीं करता, बल्कि यह व्यापक सामाजिक संरचना की उन दमनकारी प्रवृत्तियों पर भी प्रकाश डालता है, जो समलैंगिकता और अन्य विविध लैंगिक पहचानों को स्वीकृति प्रदान करने में असमर्थ रहती हैं। कुछ मातृसत्तात्मक समाजों में सामुदायिक कल्याण पर दिया जाने वाला विशेष बल और अपेक्षाकृत अधिक लचीली लैंगिक भूमिकाएँ विभिन्न यौन अभिविन्यासों के प्रति एक समावेशी वातावरण को बढ़ावा दे सकती हैं। ऐसे सामाजिक ढाँचे, कठोर पितृसत्तात्मक प्रणालियों की तुलना में, समलैंगिकता की स्वीकृति की संभावना को अधिक अनुकूल बना सकते हैं। किंतु, फिल्म में चित्रित परिवार इन प्रगतिशील मूल्यों का प्रतिनिधान नहीं करता।

निष्कर्ष :

'विचित्रम्' और 'सूक्ष्मदर्शिनी' में लेस्बियन प्रतिनिधान को सूक्ष्मता एवं संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया गया है, जो मलयालम सिनेमा में LGBTQ+ विषयों के प्रति दृष्टिकोण में एक महत्वपूर्ण प्रगति को चिह्नित करता है। यद्यपि यह दोनों फिल्मों की मुख्य कथा का केंद्र नहीं है, तथापि इसका समावेश उस फिल्म उद्योग और समाज में समलैंगिक संबंधों के सामान्यीकरण की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है, जहाँ ऐसे कथानक अब भी दुर्लभ हैं। इस विषय को कथा में सम्मिलित कर 'विचित्रम्' और 'सूक्ष्मदर्शिनी' मलयालम सिनेमा के अधिक समावेशी एवं विविध परिदृश्य के निर्माण में योगदान देती हैं।

यद्यपि इन दोनों फिल्मों को 'क्वीर सिनेमा' की श्रेणी में पूर्णतः नहीं रखा जा सकता, फिर भी वे भारतीय संदर्भ में संस्थागत और प्रदर्शनात्मक स्तर पर व्याप्त समलैंगिकता-फोबिया को प्रतिबिंबित करती हैं। ये दोनों फिल्में मुख्यधारा के व्यावसायिक सिनेमा के अपवादस्वरूप उदाहरण प्रस्तुत करती हैं, जो संवेदनशील विषयों को संतुलित दृष्टिकोण से संबोधित करती हैं, जबकि 'राजनीतिक शुद्धता' (Political Correctness) और अधिप्रचार के कठोर ढाँचों के भीतर सीमित नहीं रहतीं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. बेबी, जियो, निर्देशक, ग्रेट इंडियन किचन, मैनकाइंड सिनेमाज़, सिमेट्री सिनेमाज़, सिनेमा कुक्स, 2021
2. बाल्की, आर, निर्देशक, पैड मैन, कोलंबिया पिक्चर्स, एसपीई फिल्म्स इंडिया, होप प्रोडक्शन्स, क्रिअर्ज एंटरटेनमेंट, 2018
3. जितिन, एम. सी., निर्देशक, सूक्ष्मदर्शिनी, एवीए प्रोडक्शन्स, 2024
4. केवल्य, हितेश, निर्देशक, शुभ मंगल ज़्यादा सावधान, टी-सीरीज़, कलर येलो प्रोडक्शन्स, 2020
5. मंझुले, नागराज, निर्देशक, सैराट, ज़ी स्टूडियोज़, आटपट प्रोडक्शन्स, एस्सेल विज़न प्रोडक्शन्स, 2016
6. पद्मकुमार, एम. बी., निर्देशक, माई लाइफ पार्टनर, कीर्तन मूवीज़, 2014
7. रंजीत, पा, निर्देशक, काला, वंडरबार फिल्म्स, 2018
8. सेल्वराज, मारी, निर्देशक. कर्णन, वी क्रिएशन्स, 2021
9. सिन्हा, अनुभव, निर्देशक, थप्पड़, बनारस, मीडिया वर्क्स, टी-सीरीज़, 2020
10. वेत्रिमारन, निर्देशक, असुरन, कलैपुली एस. थानु, 2019
11. विजयन्, अचु, निर्देशक, विचित्रम्, जॉय मूवी प्रोडक्शन्स, 2022

जयकृष्णन एम्, शोधार्थी, हिंदी विभाग
श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कालडी, केरल, 683574
Gmail:Jayakrishnanm47@gmail.com Phone: +91 9746773982